NALANDA OPEN UNIVERSITY

West Gandhi Maidan, Patna

Course	-	M.A. Education, Part-1
Paper	-	V
Prepared by	-	Dr. Sangeeta Kumari
Topic	-	Learning (Part-1)
Date	-	17/04/2020

अधिगम/सीखना (Learning)

भूमिका (Introduction)

सीखना एक निरन्तर चलने वाली सार्वभौमिक प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से ही सीखना प्रारम्भ कर देता है तथा मृत्युपर्यन्त कुछ न कुछ सीखता रहता है। परिस्थिति तथा आवश्यकतानुसार सीखने की गति घटती–बढ़ती है। सीखने की प्रक्रिया का मानव जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति जो भी व्यवहार करता है, अथवा नहीं करता है, उसका अधिकांश भाग सीखने से अथवा सीखने की प्रक्रिया से प्रभावित रहता है।

अधिगम का अर्थ (Meaning of Learning)

सामान्य अर्थ में सीखना व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है। परन्तु सभी तरह के व्यवहार में हुए परिवर्तन को सीखना नहीं कहा जा सकता है। हमारे व्यवहार में कुछ परिवर्तन ऐसे होते हैं जो अपने आप होते रहते हैं। उनका आधार परिपक्वता है। केवल ऐसे परिवर्तन जो अभ्यास को पूर्व अनुभव के के कारण होते हैं, उन्हें सीखनाा कहा जाएगा।

Chaplin (1975)

''सीखना का तात्पर्य अभ्यास या अनुभव के कारण व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन के अर्जन से है।''

Baron (2003)

''सीखना का तात्पर्य अनुभव के कारण व्यवहार में होने वाला अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन से है।''

S.P. Robbins (2003)

''अधिगम का तात्पर्य अनुभव के कारण व्यवहार में होने वाला अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन से है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण करने पर हम निम्नांकित निष्कर्ष पर पहुँचते हैंः–

1. अधिगम या सीखना अपेक्षाकृत स्थायी होता है (Learning is relatively permanent)–

   सीखने में व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन या जिसे धारण योग्य परिवर्तन भी कहा गया है, होता है। अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन व्यवहार में वैसे परिवर्तन को कहा जाता है जो एक खास समय तक एक तरह से स्थायी होता है। उस खास समय की कोई निश्चित अवधि नहीं होती है। यह कुछ दिन का भी हो सकता है या कुछ महीने का भी हो सकता है।

2. सीखना व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है (Learning is the change in behaviour)–

   प्रत्येक सीखने की प्रक्रिया में बालक के व्यवहार में परिवर्तन होता है। यदि शिक्षक यह देखते हैं कि बालक के व्यवहार में परिवर्तन नहीं हुआ है, तो उसे हम सीखना नहीं कहेंगे। यह परिवर्तन अच्छा भी हो सकता है या बुरा भी हो सकता है। शब्दों को सही–सही हिज्जे करना, उनका उच्चारण करना, शब्दों का वाक्य में प्रयोग कर लेना व्यवहार के अच्छे परिवर्तन का उदाहरण हैं। चोरी करना, झूठ बोलाना आदि व्यवहार में खराब परिवर्तन के उदाहरण हैं।

3. सीखना अभ्यास या अनुभव का परिणाम होता है (Learning is a function of practice or experience)–

हमारे व्यवहार का वह परिवर्तन जो अभ्यास या अनुभव के कारण उत्पन्न होता है, वही सीखना है।

सीखना तथा परिपक्वता में अन्तर (Difference between Learning and Maturation)

सीखना तथा परिपक्वता दोनों के कारण व्यवहार में परिवर्तन होते हैं, परन्तु दोनों में कई तरह के अन्तर पाए जाते हैंः–

1) सीखने के फलस्वरूप जाो परिवर्तन होता है, उसमें अभ्यास का शामिल होना आवश्यक है पर परिपक्वता के फलस्वरूप जो परिवर्तन होता है उसमें अभ्यास शामिल नहीं होता है।
2) परिपक्वता एक जन्मजात प्रक्रिया है जबकि सीखना एक अर्जित प्रक्रिया है।
3) परिपक्वता की प्रक्रिया एक सामान्य प्रक्रिया है जबकि सीखना एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है।
4) परिपक्वता की प्रक्रिया सतत (continuous) होती है अर्थात् एक खास समय से प्रारम्भ होकर एक खास समय तक लगातार चलती रहती है। परन्तु सीखने के साथ ऐसी बात नहीं है। व्यक्ति जब अभ्यास जारी रखता है तो सीखने की प्रक्रिया होती रहती है और जब वह अभ्यास बन्द कर देता है तो सीखने की प्रक्रिया भी लुप्त होने लगती है।
5) परिपक्वता की क्रिया एक खास अवस्था आने पर बिलकुल ही मन्द या नहीं के बराबर होती है, परन्तु सीखने की क्रिया आजीवन चलती रहती है।
6) परिपक्वता से शरीर में काफी परिवर्तन आते हैं पर सीखने की प्रक्रिया से शरीर के अंगों में कोई परिवर्तन नहीं होता।
7) परिपक्वता एक शारीरिक क्रिया है जबकि सीखना एक मानसिक क्रिया है।
8) सीखने की क्रिया परिपक्वता पर निर्भर करती है परन्तु परिपक्वता की क्रिया सीखने पर नहीं।

सीखने के प्रकार (Kinds of Learning)

ऊसुबेल (Ausubel, 1968) ने सीखना के निम्नांकित चार प्रकार बताए हैंः–

(1) अभिग्रहण सीखना (Reception Learning)

इस तरह के सीखना में शिक्षार्थी को सीखने वाली सामग्री बोलकर या लिखकर दे दी जाती है और शिक्षार्थी उन सामग्रियों को आत्मसात कर लेता है।

(2) अन्वेषण सीखना (Discovery Learning)

अन्वेषण सीखना वैसे सीखना को कहा जाता है जिसमें शिक्षार्थी को दी गई सामग्रियों में से नया संप्रत्यय या कोई नया नियम या विचार की खोज कर उसे सीखना होता है।

(3) रटकर सीखना (Rote Learning)

इसमें शिक्षार्थी मनमाने ढंग से उसके आशय को बिना समझे हुए सीखता है।

(4) अर्थपूर्ण सीखना (Meaningful Learning)

अर्थपूर्ण सीखना वैसे सीखने को कहा जाता है जिसमें सीखे जानेवाली सामग्री के सार तत्व को एक नियम के अनुसार समझकर तथा उसका संबंध गत ज्ञान से जोड़ते हुए सीखा जाता है।

Gagne (1965) ने अपनी पुस्तक 'The Conditions of Learning' में सीखने का मूल आठ प्रकार का वर्णन किया है।

(i) सांकेतिक सीखना (Signal Learning)

सांकेतिक सीखना क्लासिकी अनुबंधन सीखना (Classical Conditioning Learnig) के समान होता है जिसमें कोई तत्स्य उद्दीपन के साथ कोई स्वाभाविक उद्दीपन को एक साथ कई बार दिया जाता है।

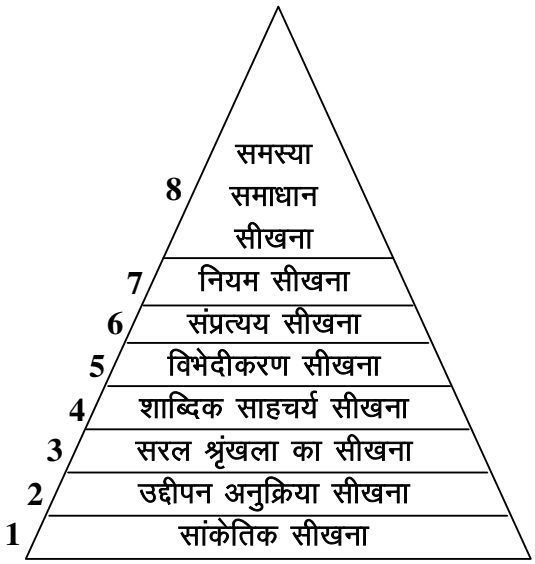

(ii) उद्दीपन अनुक्रिया सीखना (Stimulus Response Learning)

वैसे सीखना को कहा जाता है जिसमें प्राणी किसी उद्दीपन के प्रति ऐच्छिक क्रिया करता है जिसका परिणाम उसपर सुखद होता है और वह धीरे–धीरे उस उद्दीपन के प्रति वही अनुक्रिया करना सीख लेता है।

(iii) सरल श्रृंखला का सीखना (Learning of Simple Chain)

Gagne ने इस तरह से सीखना से तात्पर्य एक क्रम में होने वाले अलग–अलग कई उद्दीपन–अनुक्रिया संबंधों के सेट से बताया है। इस तरह का सीखना पेशीय सीखना (Motor Learning) में पाया जाता है। जैसे एक कार चलाना, दरवाजा खोलना, तबला बजाना आदि।

(iv) शाब्दिक साहचर्य सीखना (Verbal Association Learning)

इसमें व्यक्ति को उद्दीपन–अनुक्रिया का ऐसा क्रम सीखना होता है जिसमें शाब्दिक अभिव्यक्ति निहित होती है। जैसे–कविता याद करना, शब्दावली सीखना आदि।

(v) विभेदीकरण सीखना (Learning Discrimination)

इसमें व्यक्ति विभिन्न उद्दीपनों के प्रति अनुक्रिया करना सीखता है। जैसे बालकों द्वारा त्रिभुज एवं चतुर्भुज में अन्तर सीखना आदि।

(vi) संप्रत्यय सीखना (Concept Learning)

कई वस्तुओं के सामान्य गुणों के आधार पर कोई विशेष अर्थ को सीखना संप्रत्यय सीखना कहा जाता है। जैसे बाघ, सिंह, सियार शब्दों में एक सामान्य गुण अर्थात् जंगली पशु का संप्रत्यय छिपा हुआ है।

(vii) नियम सीखना (Rule Learning)

यह एक महत्वपूर्ण सीखना है। इस तरह का सीखना संप्रत्यय सीखना पर सर्वाधिक आधारित होता है। नियम दो या दो से अधिक संप्रत्ययों के बीच क नियमित संबंध का पता चलता है। इस तरह के सीखना से व्यक्ति का ज्ञान भंडार विकसित होता है।

(viii) समस्या समाधान सीखना (Problem Solving Learning)

यह Gange के श्रृंखलाबद्ध सीखना की सबसे ऊपरी आवस्था है। इसमें व्यक्ति किसी नियम का उपयोग करके कोई समस्या का समाधान करता है और एक नए तथ्य को सीखता है।

<u>अधिगम विधियाँ (Learning Methods)</u>

अधिगम के लिए व्यक्ति अनेक विधियों का प्रयोग करता है जिसमें प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं:–

(1) करके सीखना (Learning by doing)

व्यक्ति किसी भी कार्य को स्वयं करने का अभ्यास करता है जिसके फलस्वरूप वह उस कार्य को सीख जाता है।

(2) निरीक्षण करके सीखना (Learning by observation)

इसके अन्तर्गत व्यक्ति स्वयं घटनाओं का निरीक्षण करके नवीन बातों को सीखता है।

(3) परीक्षण करके सीखना (Learning by experimentation)

परीक्षण करके सीखने के अन्तर्गत व्यक्ति स्वयं परीक्षण करता है तथा नवीन कार्यों को अपने अनुभव के आधार पर सीखता है।

(4) वाद विवाद विधि (Discussion Method)

वाद विवाद विधि में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ वाद–विवाद करके नवीन बातों को सीखता है।

(5) वाचन विधि (Recitation Method)

वाचन विधि के अन्तर्गत सीखने वाले द्वारा पाठ का सस्वर वाचन करके सीखा जाता है।

(6) अनुकरण विधि (Imitation Method)

इस विधि में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर तथा उसका अनुकरण करके सीखता है।

(7) प्रयास एवं त्रुटि विधि (Trial and Error Method)

प्रयास एवं त्रुटि विधि में व्यक्ति अर्न्तदृष्टि के द्वारा कार्य करने का प्रयास करता है तथा बार–बार प्रयास करके सीखता है।

(8) पूर्ण विधि (Whole Method)

इस विधि में पाठ को एक साथ, एक बार में सम्पूर्ण दोहराकर याद किया जाता है।

(9) अंश विधि (Part Method)

इस विधि में व्यक्ति द्वारा पाठ को सुविधानुसार कुछ अंशों में बाँट कर एक–एक करके विभिन्न अंशों को याद किया जाता है।

(10) अन्तराल विधि (Spaced Method)

अन्तराल या विराम विधि में पाठ को सुविधानुसार थोड़े–थोड़े समय के अन्तर के बाद बार–बार दोहरा कर याद किया जाता है।

(11) सतत विधि (Continuous Method)

सतत या अविराम विधि में पाठ को एक ही बैठक में अनेक बार दोहराकर याद किया जाता है।

<u>कक्षा में अधिगम के प्रभावित करने वाले कारक (Factors influencing classroom Learning)</u>

अधिगम की प्रक्रिया अनेक कारकों से प्रभावित हो सकती है। अधिगम को प्रभावित करने वाले कुछ कारक निम्नलिखित हैं:–

(1) विषय वस्तु (Subject Matter)

अधिगम की प्रक्रिया पर विषय वस्तु का भी प्रभाव पड़ता है। कठिन व असार्थक बातों की अपेक्षा सरल व सार्थक बातों को बालक अधिक शीघ्रता से सीखता है। यदि सीखने वाली विषय सामग्री बालक के लिए व्यक्तिगत उपयोग तथा महत्व रखती है तो बालक उसे सरलता से सीख लेता है।

(2) शारीरिक स्वास्थ्य परिपक्वता (Physical Health and Maturity)

शरीरिक दृष्टि से स्वस्थ व परिपक्व बालक सीखने में अधिक रूचि लेते हैं। इसके विपरीत कमजोर व अपरिपक्व बालक सीखने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

(3) मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)

मानसिक रूप से स्वस्थ बालक सीखने की क्षमता अधिक रखते हैं। मानसिक रोगों से पीड़ित बालक प्रायः मन्द गति से नीवन बातों को सीखते हैं।

(4) अधिगम इच्छा (Will to Learn)

अधिगम सीखने वाले की इच्छा पर भी निर्भर करता है। यदि बालक में किसी बात को सीखने की दृढ़ इच्छा शक्ति होती है तो वह प्रतिकुल परिस्थितियों में भी उस बात को सीख लेता है।

(5) प्रेरणा (Motivation)

सीखने की प्रक्रिया में प्रेरणा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। यदि बालक सीखने के प्रति प्रेरित नहीं होता है तो वह सीखने के कार्य में रूचि नहीं लेता है।

(6) थकान (Fatgue)

थकान सीखने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करती है। थकान की स्थिति में बालक पूर्ण मनोयोग से सीखने के लिए, प्रेरित नहीं होता है। प्रातःकाल बालक स्फूर्ति से युक्त रहते हैं जिसके कारण प्रातःकाल में सीखने की सुगमता रहती है।

(7) वातावरण (Atmosphere)

अधिगम की प्रक्रिया पर वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। शान्त, सुविधाजनक, उचित प्रकाश तथा वायु वाले वातावरण में बालक अधिक सीखता है। इसके विपरीत शोरगुल तथा असुविधाजनक वातावरण में बालक सीखने की प्रक्रिया मन्द होती है।

(8) सीखने की विधि (Learning Methods)

सीखने की विधि की अधिगम की क्रिया में महत्वपूर्ण स्थान होता है। खेल विधि तथा करके सीखना विधि जैसी मनोवैज्ञानिक तथा आधुनिक विधियों में ज्ञान सुगमता व शीघ्रता से प्राप्त किया जाता है तथा यह ज्ञान अधिक स्थायी होता है।

(9) बुद्धि (Intelligence)

बालक के बुद्धि का प्रभाव सीखने की प्रक्रिया पर काफी पड़ता है। कम बुद्धि के बालक विषयों को धीरे से सीखते हैं जबकि तेज बुद्धि के बालक कठिन विषयों को भी तुरन्त सीखा लेते हैं।